''आधुनिक मिथिला में सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं बौद्धिक पुनर्जागण : एक अध्ययन''

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय कामेश्वरनगर, दरभंगा
के
सामाजिक विज्ञान संकाय (इतिहास) में
पी–एच0 डी0 उपाधि हेतु
प्रस्तावित शोध प्रबन्ध की रूपरेखा
2024

शोध पर्यवेक्षक

डॉ0 बबिता कुमारी
सहायक प्राध्यापिका
इतिहास विभागाध्यक्ष
एम0 के0 कॉलेज, त्रिमुहान
चंदौना, दरभंगा
(अंगीभूत इकाई–ल0 ना0 मि0 वि0वि0, दरभंगा, बिहार)

गवेषिका

आरती राज
इतिहास विभाग
ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा

पी–एच0डी0 उपाधि हेतु शोध परियोजना का प्रारूप

1. शीर्षक :– आधुनिक मिथिला में सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं बौद्धिक पुनर्जागण : एक अध्ययन

2. प्रस्तावना :–

प्राचीन भारतीय इतिहास में अपनी सांस्कृतिक उपलब्धियों के कारण मिथिला का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। मिथिला भौगोलिक रूप से विस्तृत क्षेत्र रहा है, जो $25^0 28$ और $26^0 52^|$ उत्तरी अक्षांश तथा $84^0 56^|$ और $86^0 46^|$ पूर्वी देशान्तर के बीच अवस्थित है। हिमालय पर्वत मिथिला राज्य की उत्तरी सीमा की रक्षा करता है तथा पूर्व, पश्चिम एवं दक्षिण में क्रमशः महानन्दा, गंडकी एवं गंगा नदी स्थित है। प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण मिथिला संस्कृति के अन्तर्गत चम्पारण, दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर, बेगूसराय, खगड़िया, मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, शिवहर, कटिहार, सहरसा, मधेपुरा तथा पूर्णिया जिला एवं नौगछिया अनुमंडल और नेपाल की तराई क्षेत्र सम्मिलित है। कनिंघम के अनुसार विदेह राज्य चम्पारण, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर एवं मुंगेर जिला तक विस्तृत था। वृहद् विष्णु पुराण के मिथिला खण्ड में मिथिला (तीरभुक्ति) की सीमाओं के विषय में निम्नांकित रूप में वर्णन किया गया है –

गंगाहिमवतोर्मध्ये नदी पंचदशान्तरे।
तैरभुक्तिरिति ख्यातो देशः परमपावनः।।
कौशिकीन्तु समारम्भ गण्डकी मधिगम्य यै।
योजनानि चतुर्विंशत् व्यायामः परिकीर्तितः।।
गंगा प्रवाहमारभ्य यावद्धैमवतं वनम्।
विस्तारः षोऽषः प्रोक्तो देशस्य कुलनन्दन।।
मिथिला नाम नगरी नामस्ते लोकविभुत।
पंचभिः कारणैः पुण्या विख्याता जगतीत्रये।।

पौराणिक स्रोतों के आधार पर ज्ञात होता है कि मिथिला के पूर्व में कौशिकी पश्चिम में गंडकी, दक्षिण में गंगा एवं उत्तर में हिमालय पर्वत की श्रृंखला स्थित थी। ***बृहदविष्णुपुराण*** से जानकारी मिलती है कि कौशिकी नदी से गंडक नदी तक मिथिला की लम्बाई 24 योजन या 96 कोस थी तथा गंगा से हिमालय पर्वत तक मिथिला 16 योजन या 64 कोस की चौड़ाई में फैला हुआ है।

मिथिला में गंगेश उपाध्याय ने ज्ञान की एक नूतन शाखा नव्य न्याय का उद्घाटन प्राचीन न्यायदर्शन की परम्परा में किया, जिसे वर्द्धमान पक्षधर, भवनाथ,

शंकर आदि दार्शनिकों ने आगे पल्लवित पुष्पित किया। विश्वविद्यालय के रूप में मिथिला की पहचान होने लगी और देश के विभिन्न हिस्सों से छात्र यहाँ न्याय दर्शन एवं मीमांसा दर्शन तथा नव्य न्याय की शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से छात्र यहाँ आने लगे। विद्वान आचार्यों के योगदान से मिथिला में ऐसी पाठशालाओं और विद्यालयों का जाल फैल गया जो ज्ञान के स्तर पर प्राचीन विश्वविद्यालय से जरा भी कम नहीं थे। पुराण, तंत्र, ज्योतिष, साहित्य, राज्यशास्त्र और धर्मशास्त्रों का इस युग में नए सिरे से अध्ययन किया गया। अनेक ग्रन्थों की रचना कर चंडेश्वर ने ज्ञान की शाखाओं को समृद्ध किया।

3. पूर्व अध्ययन की समीक्षा : आधुनिक मिथिला के इतिहास पर अनेक शोधपरक बहुमूल्य कार्य हुए हैं, जिनमें तेरहवीं–सोलहवीं शताब्दी का इतिहास भी शामिल है। परंतु पुनर्जागरण को केन्द्रित कर कोई स्वतंत्र कार्य अब तक नहीं हो सका है। उन्नीसवीं सदी के उतरार्द्ध में कतिपय प्राचीन पांडुलिपियों के संग्रह और टिप्पणी लेखन के द्वारा कविश्वर चंदा झा ने मिथिला के इतिहास लेखन की परम्परा की शुरूआत की, जिसे ग्रियर्सन ने **मैथिली कृष्टोमैथी** लिखकर आगे बढ़ाया। बीसवीं सदी के तीसरे–चौथे दशक के दौरान परमेश्वर झा लिखित **मिथिला तत्व विमर्श** और मुकुन्द झा बख्शी की **मिथिला भाषामय इतिहास** के लेखन से सही अर्थो में मिथिला के इतिहास लेखन की शुरूआत हुई। इसी अवधि में एस0एन0सिन्हा ने **हिस्ट्री ऑफ तिरहुत** लिखकर इतिहास लेखन के कार्य को आगे बढ़ाया। परंतु ये मिथिला के प्रारम्भिक इतिहास ग्रंथ सतही और ऐतिहासिक अन्तर्दृष्टि के आभाव से ग्रसित हैं। उपेन्द्र ठाकुर ने **हिस्ट्री ऑफ मिथिला**, **हिस्ट्री ऑफ मिथिला पेंटिंग्स** और **जैनिज्म एंड बुद्धिज्म ऑफ मिथिला** लिखकर इतिहास लेखन को गति प्रदान की, परंतु इनकी रचनाएँ आमतौर पर साहित्यिक स्त्रोतों पर आधारित हैं। उपेन्द्र ठाकुर की रचनाएँ ऐतिहासिक दृष्टि से महत्पवूर्ण होते हुए भी मिथिला के इतिहास के विविध पक्षों पर होने के कारण तेरहवीं–पंद्रहवीं शताब्दी के पुनर्जागरण के साथ बहुत अधिक न्याय नहीं कर पायी है। मिथिला के इतिहास के सन्दर्भ में विजय कान्त मिश्र की रचनाएँ **मिथिला ऑट्स एण्ड आर्टीटेक्चर** और **कल्चरल हेरिटेज ऑफ मिथिला** उपेन्द्र ठाकुर परंपरा में लिखे गए इतिहास ग्रंथ हैं। तेरहवी–पंद्रहवी शताब्दी के पुनर्जागरण के इतिहास की दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण कृति राधाकृष्ण चौधरी की प्रसिद्ध पुस्तक **मिथिला इन द एज ऑफ विद्यापति** है। इस ग्रंथ में राधाकृष्ण चौधरी ने

तेरहवी–पंद्रहवी शताब्दी के मिथिला का वृहत इतिहास लिखा है, जो एक पांडित्यपूर्ण कृति होने के बावजूद पुनर्जागरण के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक आयामों पर आलोचनात्मक प्रकाश नहीं डालता। वस्तुतः सूचना एवं जानकारी की दृष्टि से विवरणात्मक कोटि का यह ग्रंथ जितना ही अधिक सूचनाप्रद एवं उपयोगी है, उतना ही अधिक आलोचनात्मक दृष्टि का आभाव भी खटकता है। सूचना की दृष्टि से डी0सी0 भट्टाचार्य की पुस्तक **हिस्ट्री ऑफ नव्य न्याय इन मिथिला** आर0 के चौधरी की रचनाएँ **हिस्ट्री ऑफ मुस्लिम रूल इन तिरहुत, ए सर्वे ऑफ मिथिला लिटरेचर मैथिली साहित्यिक निबंधावली, मिथिला का राजनैतिक इतिहास** एवं **मिथिला का सांस्कृतिक इतिहास,** केदार गुप्ता की **विद्यापति एवं उनका युग,** इंद्रकान्त झा की **विद्यापतिकालीन मिथिला,** सी0पी0एन0 सिन्हा की दी **कर्नाटाज ऑफ मिथिला**, उपेन्द ठाकुर की **साहित्य और संस्कृति एवं मिथिला लोक कला, उमेशमिश्र की मैथिली संस्कृति ओ सभ्यता,** ग्रियर्सन की **मोडर्न वर्नाकुलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान**, जयकान्त मिश्रा की **हिस्ट्री ऑफ मिथिला लिटरेचर**, शुभद्र झा की **फोर्मेशन ऑफ मैथिली लैंग्वेज** हरप्रसाद शास्त्री की **बौद्धगान ओ दोहा,** जयधारी सिंह की **वैद्धगान में तांत्रिक सिद्धान्त** आदि पुस्तकें उपयोगी हैं, जो तेरहवीं–पंद्रहवीं शताब्दी के दौरान मिथिला में हुए सांस्कृतिक पुनर्जागरण के विविध पक्षों के सन्दर्भ में न्यूनाधिक जानकारी प्रदान करते हैं।

4. अध्ययन का उद्देश्य, महत्व एवं प्रासंगिकता : प्रस्तावित शोध कार्य का उद्देश्य आधुनिक मिथिला में हुए ऐतिहासिक पुनर्जागरण के माध्यम से मिथिला संस्कृति का समग्र एवं संरचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना है। उल्लेखनीय है कि भारत के अन्य हिस्सों में आठवीं–तेरहवीं शताब्दियों के दौरान क्षेत्रीय राजनीतिक शक्तियों के उदय, भूमि अनुदान की प्रथा पर आधारित सामंतवाद के विस्तार, भक्ति आंदोलन के प्रसार और कृषि आधारित ग्रामीण अर्थ प्रणाली की प्रमुखता के परिणामस्वरूप अनेक क्षेत्रीय संस्कृतियों का उद्‌भव हुआ, परन्तु इस अवधि में प्राचीन सांस्कृतिक परम्पराओं से समृद्ध होने के बावजूद मिथिला संस्कृति एक निश्चित आकार ग्रहण करने में असफल रही। ग्यारहवीं शताब्दी के अंत में कार्नाट राजवंश के उदय के साथ स्वतंत्र मिथिला राज्य का निर्माण हुआ और तेरहवीं सदी तक मिथिला की राजनीतिक स्वतंत्रता बनी रही। अतः भारत के अन्य भागों की अपेक्षा स्वतंत्र राज्य सत्ता के अभाव में मिथिला

में क्षेत्रीय सांस्कृतिक उन्मेष की प्रक्रिया बिलंब से शुरू हुई। चौदहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में मिथिला पर तुर्क–अफगान सत्ता कायम हो जाने के बावजूद मिथिला की स्थिति एक स्वायत्त राज्य की बनी रही, जिसके परिणामस्वरूप कार्नाट काल में हुए सांस्कृतिक संश्लेषण का प्रभाव ओइनवार शासनकाल में संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में अभूतपूर्व उन्नयन के रूप में प्रस्फुटित हुआ। मिथिला संसकृति का यही उन्नयन पुनर्जागरण था, जिसने इसे एक विशिष्ट पहचान प्रदान की। आज यदि मिथिला संस्कृति की पहचान ज्ञान एवं दर्शन के समृद्ध भंडार, मैथिली भाषा एवं साहित्य की कालजयी कृतियों, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त चित्रकला की मौलिकता, लोकगाथाओं की अति समृद्धि परम्पराओं आदि के रूप में की जाती है, तो मिथिला संस्कृति की यह बुनियाद तेरहवीं–पंन्द्रहवीं शताब्दी के दौरान पुनर्जागरण के माध्यम से ही पड़ी थी।

5. ज्ञान के क्षेत्र में योगदान :

जनक, याज्ञवल्क्य, गौतम, कणाद और कपिल ने यदि मिथिला संस्कृति को ज्ञान एवं दर्शन का पर्याय बनाया तो गणतांत्रिक युग में जैन एवं बौद्ध धर्म के प्रभाव में मिथिला संस्कृति ने साझे स्वरूप को ग्रहण किया। आर्य और आर्येतर, वैदिक तथा लौकिक संस्कृतियों के सम्न्वय ने मिथिला संस्कृति को एक विशिष्ट पहचान दी, जो पराजय एवं पराधीनता के लम्बे दौर में भी बनी रही। पूर्व–मध्यकाल में जब असंख्य बाह्य जनजातीय एवं राजपूत जत्थों के आक्रमणों, प्रत्याक्रमणों तथा उपनिवेशन के कारण मिथिला में विखंडन का एक लम्बा सिलसिला चल पड़ा, राजनीतिक ही नहीं सामाजिक–आर्थिक–सांस्कृतिक जीवन में भारी उथल–पुथल हुए तथा अनेक नवीन तत्वों का प्रवेश हुआ तो प्राचीन मिथिला संस्कृति की पुनर्स्थापना की आवश्यकता गम्भीरता से महसूस की गई। कर्नाट–ओइनवारकालीन सांस्कृतिक पुनर्जागरण इसी आवश्यकता की पूर्त्ति का एक प्रयास था। अतः प्राचीन मिथिला संस्कृति की कतिपय विशिष्टताओं का विवेचन अपेक्षित होगा, ताकि 12वीं–15वीं सदी के बीच हुए सांस्कृतिक पुनर्जागरण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को बेहतर ढंग से समझा जा सके।

6. अध्ययन क्षेत्र : प्रस्तुत शोध परियोजना का अध्ययन क्षेत्र आधुनिक मिथिला संस्कृति का इतिहास है। इस अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत न केवल बौद्धिक गतिविधियों और सृजनात्मक पक्षों का अध्ययन अपेक्षित होग, बल्कि मिथिला की समग्र भौतिक संस्कृति के स्वरूप तथा उसके निर्माण के कारकों–जातीय परम्पराओं के अवदानों,

भौगोलिक–भौतिक परिस्थितियों की प्रेरणा आदि के अतिरिक्त ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य के रूप में पूर्व एवं परवर्ती के साथ–साथ समकालीन भारतीय इतिहास का अध्ययन भी समीचीन होगा।

7. अध्ययन पद्धति : प्रस्तावित शोध परियोजना की अध्ययन पद्धति ऐतिहासिक एवं आलोचनात्मक होगी, जिसके अन्तर्गत पारंपरिक एवं गैर पारंपरिक स्रोतों का वैज्ञानिक विधा से जाँचे–परखे साक्ष्यों पर आधारित तथ्यों का निरूपण करते हुए आलोचनात्मक व्याख्या के द्वारा पुनर्जागरण का ऐतिहासिक अध्ययन किया जाएगा। चूँकि प्रस्तुत शोध कार्य की अन्तर्दृष्टि व्यापक संदर्भ में पुनर्जागरण के ऐतिहासिक निहितार्थों की पड़ताल करनी है, अतः जातीय एवं भौगोलिक साक्ष्यों का सहारा लेना आवश्यक होगा। इसके लिए नृतात्विक, भूपारिस्थितिक तथा भौगिोलिक ज्ञान के अध्ययन पद्धतियों का उपयोग भी अपेक्षित होगा। चूँकि इस अवधि की अनेक पांडुलिपियाँ, पुरासामग्रियाँ और पुरास्थल एवं अभिलेख उपलब्ध हैं।

8. स्रोत सामग्री की उपलब्धता : प्रस्तुत शोध कार्य के लिए पर्याप्त स्रोत सामग्रियाँ उपलब्ध हैं। वस्तुतः मिथिला की वर्त्तमान लोक संस्कृति की जड़ें इसी अवधि में निर्मित हुईं, अतः उनके सम्यक् अध्ययन के माध्यम से पुनर्जागरण के लोकतत्वों को समझा जा सकता है। यद्यपि अध्ययन अवधि में सृजित अधिकांश लोकगाथाओं, लोक एवं व्यवहार गीतों आदि का संकलन और प्रकाशन हो चुका है, जिनका स्रोत के रूप में उपयोग किया जा सकता है, किन्तु लोक साहित्य का विशाल हिस्सा आज भी लोककंठ में रचा बसा है, जिनका संकलन पर श्रोतगत उपयोग किया जा सकता है। इस अवधि की पुरा–सामग्रियाँ और कलात्मक अवशेष भी व्यापक पैमाने पर उपलब्ध हैं, जो प्रस्तुत अध्ययन को पूरा करने के लिए बहुमूल्य साक्ष्य का काम कर सकते हैं।

9. शोध परिकल्पनाः प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित शोध परिकल्पनाओं पर आधारित है–

(क) आधुनिक मिथिला संस्कृति का पुनरोदय था, जिसने आधुनिक मिथिला संस्कृति की नींव रखी।

(ख) यह आधुनिक मिथिला की समग्र भौतिक संस्कृति का पुनर्जागरण था, जो बौद्धिक ही नहीं अपितु जनजीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रकट हुआ।

10. कार्य योजना : प्रस्तुत शोध परियोजना में निम्नलिखित अध्याय होंगे –

प्रथम अध्याय :	भूमिका
द्वितीय अध्यायः	आधुनिक मिथिला में पुनर्जागरण का राजनैतिक आयाम
तृतीय अध्याय :	आधुनिक मिथिला में पुनर्जागरण का सामाजिक आयाम
चतुर्थ अध्याय :	आधुनिक मिथिला में पुनर्जागरण का सांस्कृतिक आयाम
पंचम अध्याय :	आधुनिक मिथिला में पुनर्जागरण का आर्थिक आयाम
षष्ठ अध्याय :	पुनर्जागरण का बौद्धिक आयाम
सप्तम अध्यायः	निष्कर्ष

11. संदर्भ सूची :

प्राथमिक स्रोत

1. गंगेश–**तत्वाचिन्तामणि**
2. गुलामहुसैन–**रियाज–उस–सलातीन**
3. ” –**सेर–उल–मुताखरीन**
4. चंडेश्वर–**राजनीति रत्नाकर**
5. वाचस्पति–**न्याय कणिका**
6. उदयन–**न्याय कुसुमांजलि**
7. ” – **विवाद रत्नाकर**
8. ” – **गृहस्थ रत्नाकर**
9. ज्योतिरीश्वर–**वर्ण रत्नाकर**
10. पार्थसारथिमिश्र **शास्त्रदीपिका – क्षणभंगसिद्धि**
11. मिसरूमिश्र–**विवादचन्द्र**
12. रघुनन्दन–**तिथितत्व**
13. लक्ष्मीधर–**कृत्यकल्पतरू**
14. वाचस्पतिमिश्र–**व्यवहारचिनतामणि**
15. ” – **विवादचिन्तामणि**
16. ” – **तीर्थ चिन्तामणि**

द्वितीयक स्रोत

17. Grierson, G.A., *Modern Vernacular Literature of Hindustan.*
18. गुप्ता, केदार, **विद्यापति और उनका युग**
19. झा, इंद्रकान्त, **विद्यापति कालीन मिथिला, पटना, 1986**
20. झा, मुकुन्द बख्शी, **मिथिला भाषायम इतिहास, दरभंगा**
21. झा, परमेश्वर, **मिथिला तत्व विमर्श**

22. झा, शैलेन्द्र मोहन, **विद्यापति पद संग्रह**
23. Mishra, J.K., *A Histroy of Mithili Literature, Allahabad, 1949.*
24. Mishra, Bal Kishan, *Vidyapati Padavali*
25. Mishra, Vijay Kant, *Cultural heritage of Mithila, Allahabad ,1979*
26. "   ", *Mithila Art and Architecture, Allahabad ,1978*
27. मिश्रा, उमेश, **मिथिला संस्कृति ओ सभ्यता,** दरभंगा
28. झा, रामनाथ, *मैथिल ब्राह्मणों की पंजी व्यवस्था,*
29. झा, रामनाथ, *मंत्र कुमारी,* दरभंगा, 1960
30. झा, लक्ष्मीनाथ, *मिथिला की सांस्कृतिक लोक चित्रकला,* दरभंगा, 1962
31. झा सुरेश्वर, *जनक और याज्ञवल्क्य,* कलकत्ता, 1993
32. ठाकुर, अनन्तलाल, *कम्प्रेहेन्सिव हिस्ट्री ऑफ बिहार,* जि0-I, भाग-II, पटना, 1974
33. ठाकुर, उपेन्द्र, *मधुबनी पेंटिंग,* नई दिल्ली, 1982
34. ठाकुर, उपेन्द्र, *मिथिला की लोककला,* पटना 1987
35. ठाकुर, उपेन्द्र, *हिस्ट्री ऑफ मिथिला,* दरभंगा, 1966
36. ठाकुर, उपेन्द्र, *स्टडी इन जैनिज्म एण्ड बुद्धिज्म इन मिथिला,* वाराणसी, 1964
37. ठाकुर, उपेन्द्र, *सम आसपेक्ट्स ऑफ एनसिएन्ट हिस्ट्री एण्ड कल्चर,* नई दिल्ली, 1974
38. ठाकुर, जीवानन्द, *मैथिल डाक,* दरभंगा
39. चौधरी, आर0के0, *हिस्ट्री ऑफ मुस्लिम रूल इन तिरहुत,* वाराणसी, 1970
40. चौधरी, आर0के0, *मिथिला का सांस्कृतिक इतिहास,* पटना 1961
41. सिन्हा, एस0एन0, *हिस्ट्री ऑफ तिरहुत,* कलकत्ता, 1922

शोध पर्यवेक्षक

डॉ0 बबिता कुमारी
सहायक प्राध्यापिका
इतिहास विभागाध्यक्ष
एम0 के0 कॉलेज, त्रिमुहान
चंदौना, दरभंगा
(अंगीभूत इकाई–ल0 ना0 मि0 वि0वि0, दरभंगा, बिहार)

गवेषिका

आरती राज
इतिहास विभाग
ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा

CONSENT LETTER

This is to certify **Mrs. Arti Raj,** PAT (2021-22) Roll No. E2210013 in History in the faculty of Social Sciences of L.N. Mithila University, is doing her Ph.D. Research work on the topic entitled **''आधुनिक मिथिला में सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं बौद्धिक पुनर्जागण : एक अध्ययन''**. I agree to supervise her research work.

Dr. Babita Kumari